E-learning material prepared by Dr. Abha Jha

अर्थ के सिद्धांत के रूप में अपोहवाद

डॉ आभा झा
स्नातकोत्तर दर्शनशास्त्र विभाग , डी एस पी एम यू,राँची

बौद्ध तर्कशास्त्र विशेषकर विज्ञानवादियों ने निषेध की अवधारणा के रूप मे एक सिद्धांत की विवेचना की है जिसे अपोहवाद कहा जाता है. निषध की अवधारणा का सर्वप्रथम उल्लेख हमें बौद्ध विचारक दिंगनाग की पुस्तक' प्रमाणसमुच्चय' में मिलता है तथा रत्न कीर्ति की पुस्तक 'अपोहसिद्धि' में इस अवधारणा की विस्तार से विवेचना की गई है.
अपोहवाद के सिद्धांत के अनुसार प्रत्येक वस्तु वस्तु के निषेध का निषेध है. अपोह का शाब्दिक अर्थ है ,नहीं नहीं. अपोह वह सिद्धांत है जो नहीं-नहीं द्वारा किसी शब्द के अर्थ का संकेत करता है. उपनिषदों में 'नेति नेति' शब्द का उल्लेख किया गया है अर्थात ब्रह्म को निषेधात्मक विधि से ही समझा जा सकता है. इस प्रकार अद्वैत वेदांत में 'नहीं-नहीं 'की तार्किक पद्धति द्वारा भावात्मक सत्ता तक पहुंचने का प्रयास किया है. बौद्ध दार्शनिकों के अनुसार संसार की समस्त वस्तुएं भाव और अभाव में विभाजित हैं तथा भाव पदार्थ को समझने के लिए उसका निषेध कर ही समझा जा सकता है. जैसे -गाय पद को समझने के लिए हमें कहना होगा की गाय अ -गाय नहीं है.

बौद्ध दार्शनिकों की मान्यता है कि परम सत्ता , ब्रह्म या निरपेक्ष सत् का अस्तित्व नहीं होता. यदि कोई तात्विक सता है तो वह या तो शुन्य है या मात्र विज्ञान है. बौद्ध विचारकों के अनुसार शून्य निषेध का ही पर्याय है.

बौद्ध दर्शन में निषेध की अवधारणा की वास्तविक व्याख्या बौद्ध विज्ञान वादियों के द्वारा ही की गयी है .इनके अनुसार किसी शब्द के अर्थ का ज्ञान इस शब्द के विपरीत अर्थ के निषेध द्वारा ही जाना जाता है. नीला का तात्पर्य अ-नीला का निषेध है. नीला उन सभी वस्तुओं से भिन्न है जो अ-नीला हैं . नीला और अ- नीला के अंतर्गत ही सभी वस्तुएं समाहित हैं.
अपोह्वादियों की यह मान्यता है की संसार में दो ही पद या वस्तुएं संभव है . भाव पद [नीला] और अभाव पद [अनीला]. भाव का अर्थ अभाव का निषेध है. इसे यदि प्रतीकात्मक रूप में कहा जाए तो प = ~~प. अर्थात प का अर्थ न-प नहीं है. इसे आधुनिक पाश्चात्य प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र के अंतर्गत 'द्विनिषेध का नियम' कहते हैं .अपोह की विधि एक प्रकार से द्विनिषेध की विधि ही है.

अपोह के प्रकार :

बौद्ध विचारक शांतरक्षित ने अपोह के दो प्रकारों का उल्लेख किया है- पर्युदास और प्रसज्य प्रतिषेध. पर्युदास अपोह के भी दो भेद हैं- बुध्यात्म और अर्थात्म. पर्युदास अपोह को सापेक्ष अभाव कहा जाता है. उदाहरण के लिए- अ -ब्राह्मण को खिलाओ. इसका तात्पर्य है जो ब्राम्हण नहीं हैं ,उन्हें खिलाना,जैसे क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इत्यादि .इस वाक्य में खिलाने (क्षत्रिय इत्यादि को)पर जोर दिया गया है न कि नहीं खिलाने (ब्राह्मण को)पर. इसलिए यह भावात्मक या सापेक्ष निषेध कहलाता है. प्रत्यय भेद पर आधारित पर्युदास को बूध्यात्म अपोह कहा गया है और वस्तु भेद पर आधारित पर्युदास को अर्थात्म अपोह कहां गया है.उपरोक्त उदाहरण बुध्यात्म अपोह का उदहारण है .

प्रसज्य प्रतिषेध अपोह को आत्यंतिक या पूर्ण अभाव कहा जाता है . यह किसी वस्तु के पूर्ण निषेध पर जोर देता है ,जैसे - प्याज मत खाओ. यहां प्याज का अर्थ प्याज ही है अ-प्याज नहीं. इस वाक्य से प्याज के खाने की पूर्ण मनाही का बोध होता है न कि अन्य खाद्य पदार्थों के खाने की मनाही . अतः प्रसज्य प्रतिषेध अभावमुलक अपोह है. इसे अत्यंताभाव की श्रेणी में रखा जा सकता है .अत्यंताभाव संसर्गाभाव का रूप है. प्याज नहीं खाने का अर्थ प्याज के संसर्ग का अभाव है. इसलिए इसे अत्यंताभाव की श्रेणी में रखा गया है. जबकि पर्युदास अपोह अन्योन्याभाव की श्रेणी में आता है. अ-ब्राम्हण और क्षत्रियादि में तादात्म्य या अन्योंयाभाव है .अतः यह अनन्याभाव की श्रेणी में आता है.

समीक्षा-

पर्युदास अपोह और प्रसज्य प्रतिषेध को क्रमशः अन्योन्याभाव और अत्यंताभाव की श्रेणी में रखने पर अपोह की अवधारणा निरर्थक हो जाती है ,क्योंकि तब अभाव और अपोह में कोई अंतर नहीं रह जाता. जबकि अपोह एक प्रकार का द्विनिषेध है. इसी कारण बौद्धों ने अपोह को अभाव की श्रेणी में नहीं रखा है बल्कि निषेध के अंतर्गत रखा है. अभाव तात्विक या तत्वशास्त्रिय निषेध है जबकि निषेध तार्किक अर्थात तर्कशास्त्रीय या भाषाशास्त्रीय निषेध है.

अपोह ना केवल भाषाशास्त्रीय दृष्टिकोण से बल्कि तर्कशास्त्रीय दृष्टिकोण से भी प्रासंगिक है क्योंकि अपोह सूक्ष्म विश्लेषण की विधि है. जिस अपोह का विचार दिंगनाग ने डेढ़ हजार वर्ष पूर्व पांचवी शताब्दी में दिया अर्थात जिस नियम का प्रवर्तन भारतीय भाषा दर्शन के अंतर्गत पांचवी शताब्दी के उत्तरार्ध में किया जा चुका था,उसी विचार को 19वीं ,20वीं शताब्दी में पाश्चात्य तर्कशास्त्रीयों ने द्विनिषेध के नियम के रूप में स्वीकार किया. जिससे स्पष्ट होता है कि इस विचार का महत्व आज भी है.

.....

ABHA JHA